P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

SEVA-DHAM HOSPITAL
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

COMPLETE BODY WORKSHOP
SEVA-DHAM HOSPITAL

SEVA-DHAM HOSPITAL
K. H.-57, Ring Road, Behind Indian Oil Petrol Pump, Sarai Kale Khan,
New Delhi-110013. Ph. : +91-11-26320000, 26327911 Fax : +91-1126821348
Mobile 9999609878, 9811346904, Website : www.sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1
से मुद्रित।
संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
सितम्बर, 2011

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

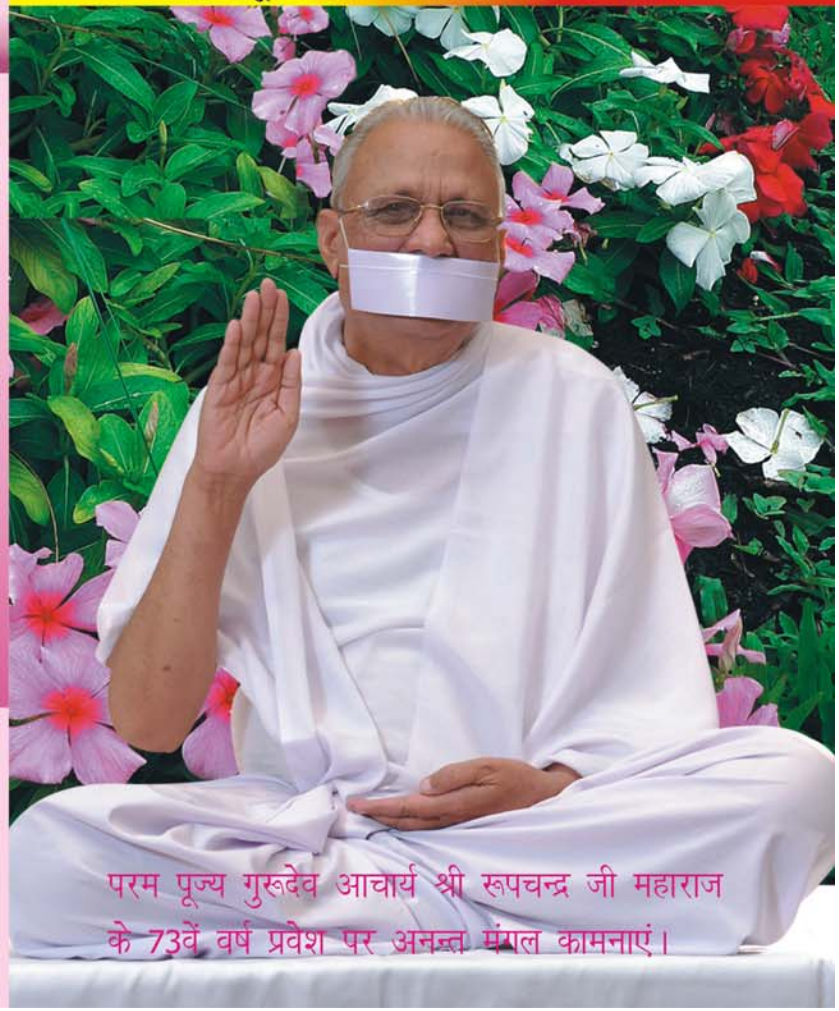

परम पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज
के 73वें वर्ष प्रवेश पर अनन्त मंगल कामनाएं।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 09 सितम्बर, 2011

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 19
06. गजल - 21
07. कविता - 22
08. जिन्दगी नदी-नाव - 23
09. गीतिका - 24
10. कहानी - 25
11. चुटकुले - 27
12. स्वास्थ्य - 28
13. बोलें-तारे - 30
14. समाचार दर्शन - 32
15. झलकियां - 33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेनू फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब

आर्ष वाणी

जहागेहेपलत्तम्मि, तस्सगेहस्स जो पहू
सार भंडाणि नीणेइ, असारं अव उज्झइ।

-जिनागमा उत्तराध्ययन

जैसे घर में आग लग जाती है तब घर का मालिक सार भूत चीजों को पहले निकालता है और व्यर्थ की वस्तुओं पर ध्यान नहीं देता यही स्थिति हमारे जीवन की है।

बोध-कथा

अक्लमंद की पहचान

जफर सादिक एक महान संत थे। एक बार उनके पास कई लोग किसी बात पर विचार-विमर्श कर रहे थे। सहसा बातें करते-करते यह प्रश्न आ खड़ा हुआ कि 'अक्लमंद व्यक्ति की पहचान क्या है?' प्रश्न सुनकर सभी सोच में पड़ गए और अपनी-अपनी तरह से जवाब देने लगे। किसी ने कहा कि जो सोच-समझकर बोले वह अक्लमंद है। इस पर संत सादिक बोले, 'अपनी समझ के अनुसार हर व्यक्ति सोच-समझकर ही बोलना चाहता है मगर ऐसा हमेशा नहीं होता। ऐसे में उन सभी को अक्लमंद नहीं कहा जा सकता। अक्लमंद तो कुछ खास लोग ही होते हैं और उनकी पहचान भी कुछ खास ही होती है।' संत सादिक का यह जवाब सुनकर सभी लोग सोच में पड़ गए। तभी उनमें से एक व्यक्ति बोला, 'जो नेकी और बदी में फर्क कर सके, वह अक्लमंद है। उसकी इस बात पर संत सादिक बोले, 'नेकी और बदी का फर्क इंसान ही नहीं जानवर तक समझते हैं। तभी तो जो उनकी सेवा करते हैं, उन्हें दुलराते हैं वे उन्हें न ही काटते हैं और न ही नुकसान पहुंचाते हैं।' यह सुनकर सभी की बोलती बंद हो गई। इस पर एक व्यक्ति संत सादिक की ओर देखकर बोला, 'हुजूर, अब आप ही अक्लमंद व्यक्ति की पहचान बताइए।' संत मुस्कराते हुए बोले, 'अक्लमंद वह है, जो दो अच्छी बातों में यह जान सके कि ज्यादा अच्छी बात कौन सी है और दो बुरी बातों में यह जान सके कि ज्यादा बुरी बात कौन सी है। अच्छी व बुरी बातों में पहचान करने के बाद यदि उसे अच्छी बात बोलनी हो तो यह बात जो ज्यादा अच्छी हो, उसे बोले और यदि बुरी बात बोलने की लाचारी पैदा हो जाए तो जो कम बुरी है उसे बताए और बड़ी बुराई से बचे। यह बात सुनने में बेशक मामूली लग रही है पर यदि इंसान इस राह पर चले तो वह न सिर्फ अक्लमंद कहलाएगा बल्कि बड़ी से बड़ी मुसीबत को टालने में भी कामयाब हो जाएगा।'

शाश्वत स्वर

बेटियों की मुस्कान और पेड़ों की हरियाली

हमारे देश में जहां हर रोज करीब 1800 से 1900 लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही मौत के घाट उतार दिया जाता है, वहां एक ऐसा गांव भी है, जहां बेटियों के जन्म पर उत्सव मनाया जाता है और कम से कम दस पेड़ लगाए जाते हैं। लड़कियों के प्रति पंचायतों की क्रूरता की खबरों के बीच यह भी एक सच्चाई है। बिहार के मुंगेर जिले के गांव धरहरा में बेटियों के जन्म को खुशी के आगमन की तरह देखा जाता है। बेटियों की प्रति स्नेह और सम्मान की भावना के कारण आज इस गांव की चर्चा अमेरिका में भी हो रही है। ग्लोबल वुमन इश्यू की एम्बेसडर मेलान वेरवीर ने अमेरिका के कई मंचों पर इस गांव के प्रयासों की सराहना की है। गांव में पुत्रियों के जन्म पर पेड़ लगाने की परंपरा की नींव वर्षों पहले डाली गई थी। यहां के बाशिंदों को अपनी इस परंपरा पर गर्व है। हो भी क्यों नहीं, सीएम से डीएम तक इस गांव में जाकर अपने को धन्य महसूस करते हैं। गांव चारों ओर से हरा-भरा नजर आता है। गांव के वृक्ष गांववालों को आर्थिक रूप से भी सबल बना रहे हैं। इन पेड़ों से लड़कियों की शादी के खर्च का बड़ा हिस्सा निकल आता है। इस परंपरा की वजह से आज इस गांव में कई लोग तीन से चार एकड़ की जमीन पर फैले बगीचे के मालिक हैं। बेटियों के जन्मदिन के मौके पर इन पेड़ों की पूजा होती है। बेटियों को इस तरह सम्मान दिए जाने के कारण ही वहां न तो किसी स्त्री को दहेज प्रताड़ना सहनी पड़ती है न ही कभी वहां भ्रूण हत्या हुई।

खास तौर से हरियाणा में ऐसे मामले ज्यादा हैं। जहां लौगिक संतुलन गड़बड़ाने से दूरदराज के राज्यों से अबोध लड़कियों को बहलाकर लाया जाता है। और किसी अधेड़ व्यक्ति के पल्ले बांध दिया जाता है। पूरे राज्य के लगभग हर गांव में ऐसी लड़कियां हैं जो दूसरे प्रदेशों से यहां लाई गई हैं। इनकी संख्या हजारों में है। इन लड़कियों को कभी काम का लालच दिखाकर लाया जाता है, तो कभी फिल्म एक्ट्रेस बनाने का लोभ देकर। इन लड़कियों से अपेक्षा की जाती है कि ये घर का सारा काम करेंगी और केवल बेटे को जन्म देंगी। समाज को इनकी बेटियां स्वीकार नहीं हैं इसलिए इनकी कन्याओं को गर्भ में ही नष्ट करने की कोशिश की जाती है।

दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाले देश चीन की भी कमोबेश यही स्थिति हो गई है। वहां भी स्त्री को लेकर समाज में मोटे तौर पर वही सोच हावी है, जो भारत में है। नतीजतन वहां भी कुंआरों की फौज बढ़ती जा रही है। हाल के एक अध्ययन में खुलासा हुआ है कि चीन में अगले 10 साल में लिंग अनुपात की बढ़ती खाई के चलते करीब 2. 30 करोड़ चीनी युवकों को अविवाहित रहना पड़ सकता है। चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंस (सीएएसएस) की स्टडी में साल 2005 की जनगणना के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा गया है कि 120 लड़कों के मुकाबले चीन में लड़कियों की संख्या महज 100 है। मेलान वेरवीर ठीक कह रही हैं कि इन भयावह तस्वीरों के बीच धरहरा पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श है।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

गुरुदेव की कलम से

कविताओं से जुड़ी घटनाएं
घटनाओं से जुड़ी कविताएं

चातुर्मास के अनन्तर राजगीर-पर्वत-माला की उपत्यकाओं में हमने एक बार दस दिनों के मौन-ध्यान का निर्णय लिया। नगरीय कोलाहल से दूर, प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर उस वातावरण में मौन-ध्यान का वह एक अद्‌भुत अनुभव था। बाहर-भीतर सर्वत्र बह रही थी शांति और आनन्द की स्वच्छ-उज्जवल धारा। किन्तु बार-बार ऐसा भी अनुभव हो रहा था। कि वह आनन्द-धारा जैसे किसी चट्टान से टकराकर वापस लौट आती है, इसी कारण उस अनन्त के साथ एकाग्रता का क्षण आगे-से-आगे खिंचता चला जाता है।

भीतर में एक ऊहापोह ने जन्म लिया। कौन-सी है वह चट्टान, जो इस आनन्द-धारा को अपने प्रिय विराट् के दर्शन से रोके हुए है? तभी उत्तर मिला कि चेतना पर आया यह मोह का घूंघट ही वह चट्टान है जो उस परम-मिलन से रोके हुए है। वह अनुभव कविता में यों उतरा-

पनघट तक आकर जो वापस लौट गया है
मन-घट तक आकर जो वापस लौट गया है
नहीं मिलेंगे उसको अपने प्रिय के दर्शन,
घूंघट तक आकर जो वापस लौट गया है,

उस चट्टान को खोज तो लिया, जो आत्म-दर्शन में बाधा थी। पर अब सवाल यह था वह घूंघट हटे तो कैसे हटे? संत कबीर ने भी इसी ओर इशारा करते हुए कहा था- **घुंघट के पट खोल तोहे पिया मिलेंगे।** किन्तु वह पट खुलना आसान तो नहीं। मोह के इस घूंघटे ने अब तक कहां-कहां नहीं भटकाया है इस जीवात्मा को। इसी चिंतन-धारा में से फिर कविता फूट पड़ी-

बहुत-बहुत भटकाया हमको इस पनघट ने
बहुत-बहुत भटकाया हमको इस मन-घट ने

जनम-जनम से भटक रहे पर चैन न पाया,
बहुत-बहुत भटकाया हमको इस घूंघट ने।

(1)

कलकत्ता-प्रवास में एक कविता-गोष्ठी का प्रसंग। कुछ कवि-बन्धुओं के साथ-साथ कुछ अन्य श्रोता-गण भी उपस्थित थे। प्रसंग-वश कविता क्रम में मैंने मुक्तक पढ़ा- पनघट तक आकर...घूंघट तक आकर जो वापस लौट गया है।

सभी श्रोताओं में से एक आवाज चीखी। मुनि होकर ऐसी कविताएं लिखते हैं? पंक्तियों को दुहराते हुए वह बोला- 'नहीं मिलेंगे उसको अपने प्रिय के दर्शन, घूंघट तक आकर जो वापस लौट गया है'- प्रिय के दर्शन..., घूंघट... क्या अर्थ है इस कविता का?

गोष्ठी में सन्नाटा-सा छा गया। मैं उसके तमतमाए चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। दूसरे ही क्षण मैंने मुस्कराते हुए उससे पूछा- आपकी समझ में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

बिल्कुल साफ है इसका अर्थ- उसने जैसे निर्णय देते हुए कहा, इसमें प्रयुक्त शब्द स्वयं बोल रहे हैं कि यह कविता सांसारिक वासना की भूमिका पर लिखी गई है। वह फिर बुदबुदाया- प्रिय के दर्शन... घूंघट...। और फिर वह चुप हो गया।

एक तीखा मौन पूरे वातावरण में फैल गया। कविता-पाठ का मधुर प्रसंग एक अवांछनीय/अप्रिय आवेश में बदल गया था। इस सारे घटना-क्रम से अविचलित मैंने सहजता से कहा- आप जिस भूमिका पर खड़े हैं, वहां इसका अर्थ इसके अलावा और हो भी क्या सकता है?

एक जोरदार ठहाका पूरे हाल में गूंज गया। नहीं पता, वे महाशय मेरे उत्तर को समझ पाए या नहीं। वासना की धरती पर खड़े चित्त के लिए साधना की भूमिका को समझ पाना सम्भव भी कैसे हो सकता है।

(2)

उन दिनों राजस्थान के एक कस्बे में हमारा प्रवास चल रहा था। एक दिन उस क्षेत्र के एक राजनेता अपने कुछ भक्तों के साथ मेरे पास आए। बातचीत के प्रसंग में उन्होंने कहा- मुनिजी, हमने सुना है आप कवि भी हैं। कविताएं सुनने के लोभ में ही हम आपके

पास आए हैं। आशा है आप हमें निराश नहीं करेंगे। साथ में आए भक्त भी उनके इस आग्रह के साथ जुड़ गए।

उनके इस प्रस्ताव ने मुझे असमंजस में डाल दिया। नेताजी के डीलडौल को देखकर समझ में नहीं आ रहा था कि कविताएं भीतर कहां से प्रवेश पाएंगी मन में यह भी आया कि इस देश का दुर्भाग्य है, जहां किसी कम्पनी का क्लर्क बनने के लिए तो कोई-न-कोई योग्यता (Qualification) चाहिए, किन्तु राजनेता बनने के लिए कोई भी योग्यता (Qualification) की जरूरत नहीं है। और उससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि उनमें सारी योग्यताएं आ गई हैं। यही कारण है कि बड़ी-2 विज्ञान-गोष्ठियों का उद्घाटन, एक आठवीं कक्षा में फेल मंत्री-महोदय को करते देखा गया है। एक चरित्रहीन राजनेता को बड़े-बड़े धर्म-सम्मेलनों का शुभारम्भ करते देखा गया है।

उनका आग्रह मेरे लिए धर्म-संकट था। स्थिति-वश वह आग्रह पूरा होना जरूरी था तो मेरे लिए कविता के सम्मान की रक्षा करना भी जरूरी था। मैंने कहा- जिन हालात में से आज देश गुजर रहा है, उस पर एक व्यंग्य आप सबके सामने प्रस्तुत है-

न तुम्हारे पास रिवाल्वर,
न तलवार
फिर भी तुम इतने खूंख्वार?
जी हां, बनिया हूं,
नमस्कार,

इतना सुनते ही नेताजी खुशी से उछल पड़े। बोले- ठीक लिखा आपने, ये बनिए ऐसे ही होते हैं। साथ में आए भक्तों के चेहरे देखने लायक थे। मैंने कहा- आगे भी सुन लीजिए-

न तुम कोई बनिया,
न डाकू-सरदार
फिर भी तुम इतने खूंख्वार?
जी हां,
नेता हूं, खबरदार।

इस बार साथ में आए भक्तों ने तालियां बजाते हुए कहा-बिल्कुल यह सही है, आज के नेताओं की तस्वीर खींची है आपने। और नेताजी का चेहरा देखने लायक था। मैंने फिर धीमें-से कहा- आगे और सुन लीजिए-

न तुम कोई नेता,
न तुम्हारे दल की सरकार,
फिर भी तुम इतने खूंख्वार?
जी हां,
चमचा हूं,
नेता का बरखुरदार।

अब सब कोई चुप थे। सबके ही चेहरे थे देखने लायक। मुझे संतोष था कि मैंने उनका आग्रह भी पूरा किया और कविता के सम्मान की रक्षा भी की।

(3)

एक महान आचार्य के शताब्दी महोत्सव की पुण्य आयोजना। गांव-गांव, शहर-शहर में भव्य शोभा-यात्राएं। धरती-आकाश को गुंजाने वाले जोशीले नारे। दैनिक-साप्ताहिक अखबारों में आकर्षक चित्रों के साथ बड़े-बड़े आलेख।

चमकदार साज-सज्जा में साहित्य-प्रकाशन। तेज भड़कीली रोशनियों से जगमगाते प्रवचन-मण्डपों में विशाल सम्मेलन। नेताओं, सेठ-साहूकारों और सन्तों-गुरुओं, की छत्रछाया में आम लोगों का जमघट। इस तामझामपूर्ण उत्सव की शिखर-परिणति (Climax) देश की राजधानी दिल्ली में एक विशालकाय रैली के रूप में होनी थी, जिसका उद्देश्य था देश की प्रधानमन्त्री के समक्ष अपने समुदाय का शक्ति-प्रदर्शन। (लाख प्रयत्नों के बावजूद यद्यपि प्रधानमन्त्री उस रैली में शामिल नहीं हुई)।

एक अजीब-सी तृष्णा और वितृष्णा को सूंघा जा सकता था पूरे वातावरण में। नाम था महान आचार्य की पुण्य शताब्दी पर श्रद्धांजति-समर्पण का, किन्तु उसकी आड़ में शीर्षस्थ व्यक्ति यश और नाम लूटने में लगे थे, और समाज के धन पर नेतागीरी करने वाले पैसा लूटने में। मेरे कवि-मन से यह सब नहीं देखा गया। उसमें से जिस मुक्तक ने जन्म लिया, वह इस प्रकार है-

एक दर्द भीतर-ही-भीतर कसक-कसक उठ आता है,
नाम रोशनी का लेकर अन्धेरा लाभ उठाता है,
महापुरुष के पुण्य नाम की चमक-दमक में यह मानव,
कोई नाम कमाता है और कोई दाम कमाता है,

मुक्तक प्रकाश में क्या आया, जैसे पूरे समाज में तूफान हो आ गया। शीर्षस्थ नेतृत्व का जैसे आसन ही डोल उठा। स्पष्टीकरण के लिए समाज के विशिष्ट प्रतिनिधि को मेरे पास भेजा गया। उन्होंने स्पष्टीकरण मांगते हुए पूछा- इस मुक्तक का अर्थ क्या है?

आपको कहां समझ में नहीं आया, मैंने कहा।

किन्हें लक्ष्य में रखकर यह लिखा गया है, उनका अगला प्रश्न था।

जो भी ऐसा करते हैं, उनके लिए है, मेरा उत्तर था।

इसमें तो साफ इशारा उन-उनकी ओर है, यह कहते हुए उन्होंने दो-तीन नाम गिनाए।

मैंने कहा- इस मुक्तक में ऐसा कोई नाम नहीं है। अब में यह जानना चाहता हूं आपका इशारा इन नामों की ओर ही क्यों गया?

वे एक बार तो सकपकाए, फिर मुस्करा दिए।

मैं भी मुस्कराया। सारे वातावरण में मुस्कान फैल गई।

(4)

हैदराबाद की सड़कों से पद-यात्रियों का हमारा काफिला गुजर रहा था। तभी हमारे पास से एक रिक्शा गुजरा। रिक्शे में परदे के भीतर सवारियां थीं।

रिक्शा आगे बढ़ते हुए दो मनचले युवकों के पास से गुजरा। युवकों ने न आव देखा न ताव, हाथ से उस परदे को ऊपर उठा दिया। भीतर दो वृद्ध मुस्लिम औरतें बैठीं थी। वे युवकों की ओर देखते हुए खिलखिलाकर हंस पड़ी। युवक एक बार तो झेंप गए, फिर वे भी अपने को हंसने से नहीं रोक सके। यह घटना कागज पर इन शब्दों में उतरी-

आकर्षण
कभी रूप में नहीं,
परदे में होता है,
और परदा
रूप में लिए
परदे के लिए होता है,
छुपा नहीं है राज जिससे
परदे के भीतर का,
क्या उससे हमारा कभी कोई परदा होता है?

(5)

जिला-न्यायाधीश थे वे। चाहते थे कि उच्च न्यायालय में वे न्यायाधीश बन सकें। ऐसा सुना गया कि उनका पिछला रिकार्ड आपत्तिजनक होने के कारण उच्च न्यायालय में उनकी नियुक्ति नहीं हो पा रही थी। सारे उपाय असफल होने पर वे अपने धर्माचार्य के पास पहुंचे। गुरुदेव का आशीर्वाद मिल जाए तो बेड़ा पार हो जाए। गुरुदेव भी अपने शिष्य को उच्चन्यायालय के न्यायाधीश के रूप में देखना चाहते थे। पर हो तो कैसे? पिछला रिकार्ड सबसे बड़ी बाधा थी।

आखिर रास्ता मिल ही गया। एक महान् धर्माचार्य के रूप में गुरु देव की ख्याति थी। संत की ख्याति को भुनाने की योजना बनी। राष्ट्रीय चरित्र और न्यायपालिका जैसे विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। सान्निध्य गुरुदेव का रखा गया। मुख्य अतिथि बनाये गए उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और गोष्ठी-स्थल रखा गया जिला-न्यायाधीश की कोठी। नगर के कुछ और जज तथा वकील-गण भी आमंत्रित थे। संयोजक थे खुद जिला-न्यायाधीश महोदय।

समय पर विचार-गोष्ठी आरम्भ हुई। जिला-जज महोदय ने अपने संयोजकीय भाषण में उच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश को प्रसन्न करने की भरपूर कोशिश की। अपने भाषण में उन्होंने, अपने गुरुदेव और प्रमुख न्यायाधीश की ओर इशारा करते हुए यहां तक कह दिया, आज देश में जब सर्वत्र अंधेरा-ही-अंधेरा है, वहां केवल ये ही वे स्थान हैं, जहां आदमी को उजाला मिलता है, यहां से कोई भी आदमी निराश नहीं लौटता है, आदि-आदि।

यह बातें मुझे तीर की तरह चुभ गई। मन में आया, खुशामद की भी कोई हद होती होगी। संयोग से, उस गोष्ठी में मुझे बोलने का अवसर मिल गया। मैंने कहा- सुना है किसी प्रसिद्ध कथाकार के पास एक नवोदित कथा-लेखक आया। वह बोला- आज के प्रकाशक, लेखक और विक्रेताओं ने मिलकर एक ऐसी साजिश कर रखी है, जिससे किसी भी नवोदित प्रतिभा को आगे आने का अवसर ही नहीं मिल पाता है। इस स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए? प्रसिद्ध कथाकार ने कहा- तुम भी इस साजिश में शामिल हो जाओ।

मैंने कहा- उस नवोदित कथाकार ने क्या किया, इसकी मुझे जानकारी नहीं है। किन्तु इतना मैं जरूर जानता हूं कि आज जो देश में चारों ओर अन्धेरा बढ़ रहा है, अन्धेरे की इस साजिश में कौन कितना बचा हुआ है, कहना मुश्किल है। अभी संयोजक महोदय के भाषण की पीड़ा में से मेरे मन-मस्तिष्क में एक कविता उभर आई है, उसमें शायद इस प्रश्न का उत्तर मिल जाए।

इस देश के मन्दिर में
कहां दरार नहीं है?
सही सलामत एक भी
दरो-दीवार नहीं है
मत पूछो,
किसने लूटा है इस गुलशन को,
यह पूछो,
इस लूट में कौन हिस्सेदार नहीं है,
तालियों की गड़गड़ाहट से गोष्ठी का वातावरण सजीव हो उठा।

(6)

सन् 1978 के दिल्ली वर्षावास में धर्म-जगत से सम्बन्धित एक ऐसा घटना-प्रसंग सामने आया, जिसने मुझे भीतर-बाहर पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। वह शताब्दी तथा कथित भगवानों का उदय-काल थी। देश-विदेशों में अनेक भगवानों का जन्म हो चुका था। ऐसे ही एक भगवान के चंगुल में फंसी एक धर्मभीरु विदेशी युवती की दास्तान सामने आई। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारतीय योगियों का अपना अलग ही प्रभाव रहा है। उसी का लाभ उठाते हुए उस तथाकथित भगवान ने रेडियो, टी.वी तथा प्रेस-माध्यमों से अपने को अवतार के रूप में प्रचारित किया। उस प्रचार-सम्मोहन में अनेक गोरी चमड़ी वाले आ फंसे। उनमें से ही वह युवती एक थी। भगवद्-दर्शन करवाने के लिए गुरु-मन्त्र के साथ उसे चरस का कश दिया गया और वह आनन्द-लोक में पहुंच गई। फिर शुरू हुआ उसके जीवन के साथ खिलवाड़, जिसे अपने भगवान की लीला का प्रसाद मानकर स्वीकार कर लिया। किन्तु सच्चाई के प्रति जब आंख खुली, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। जीवन तो सब तरह से उजड़ ही गया था, उस कुटिल चंगुल से उसका निकल पाना भी मुश्किल हो रहा था।

इसी बीच भारतीय मानस पर अपना प्रभाव जमाने के लिए वे तथाकथित भगवान जहाज भरकर विदेशी भक्तों को अपने साथ भारत में लेकर आए। उनमें वह युवती भी थी, जो अवसर पाकर वहां से भाग छूटी और एक भारतीय डाक्टर के यहां उसने शरण ली।

यह घटना-प्रसंग जब सामने आया, इन तथाकथित आचार्यों- भगवानों के प्रति मन ग्लानि से भर उठा। भीतर का दर्द इन शब्दों में रो उठा-

घुटता है अब श्वास कि खिड़की खोल दो तुम
रोता है विश्वास कि खिड़की खोल दो तुम
नहीं चाहिए हमें किसी भी प्रभु के दर्शन
बन्द करो बकवास कि खिड़की खोल दो तुम,

मन में आया, इन धर्म-गुरुओं और भगवानों के विष-दंश से बचना बहुत जरूरी है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो धर्म के प्रति जन-मानस की आस्था अनास्था में बदल जाएगी।

अपमानों से डरे आज तक सम्मानों से डरना होगा।
अभिशापों से डरे आज तक वरदानों से डरना होगा।
देख धर्म-गुरुओं की हालत हमको तो ऐसा लगता है
शैतानों से डरे आज तक भगवानों से डरना होगा,

कदाचित् यह दर्द इन तथाकथित धर्माचार्यों और भगवानों के विष-देश के प्रति भोली-भाली जनता की आंख खोल सके।

(7)

आपात् काल की घोषणा के पश्चात देश में एक शब्द लम्बे समय तक चर्चा का विषय बना रहा। वह शब्द था अनुशासन। अपनी मनमानी व्यवस्थाओं को थोपने के लिए इस गरिमापूर्ण शब्द को नेताओं ने खूब भुनाया। राजनीति और समाज के जीवन में आज नेताओं का चरित्र कैसा रह गया है, यह किसी से छुपा नहीं है। किन्तु दुःख इस बात का है आज धर्म में भी आचार्यों का चरित्र नेताओं जैसा बनता जा रहा है।

आपत्काल से प्रेरणा पाकर एक धर्माचार्य ने अपने धर्मसंघ में उभरते अंसतोष को दबाने के लिए अनुशासन-वर्ष की घोषणा का निश्चय किया। इस घोषणा के लिए पूर्ववर्ती प्रभाशाली आचार्य की शताब्दी-महोत्सव को चुना गया। घोषणा समारोह में राज्य और केन्द्र के अनेक मन्त्री-गण भी उपस्थित थे। स्पष्ट था धर्म नेता और राजनेता दोनों अपने कार्यों पर एक-दूसरे से ठप्पा लगवाना चाहते थे।

अनुशासन और मर्यादा पर जमकर भाषण हुए। नेताओं ने आचार्य की कथा, आचार्य जी ने नेताओं की जी खोलकर सराहना की। संयोजक महोदय मेरे विचारों से परिचित थे।

उनको ऊपर से निर्देश भी थे कि मुझे बोलने के लिए समय न दिया जाए। किन्तु जनता की मांग पर संयोजक को मजबूरन समय देना पड़ा।

धर्म और राजनीति के गठबंधन से चलने वाले लगभग तीन घण्टे के इस नाटक से सामने बैठा जन-समुदाय भीतर-भीतर बहुत दुःखी था। मेरा कवि-मन तो इस सिद्धान्त-हीन गठबन्धन से पूरी तरह आहत था। मंच पर खड़े होते ही कविता की भाषा में मैंने गरजते हुए कहा-

रोशनी की मशालें वे हथियाये हुए हैं
जिनके चारों ओर अन्धेरे छाये हुए हैं
छुपाये हुए हैं जो अपने असली चेहरों को,
वे ही सिर पर आसमान उठाए हुए हैं

तालियों की गड़गड़ाहट से विशाल प्रवचन-पंडाल काफी देर तक गूंजता रहा।

सिद्धान्तहीन राजनीति पर व्यंग्य करते हुए मैंने कहा- नेताजी गांव में वोट मांगने के लिए गए। लोगों ने शिकायत की, पिछले 20 वर्षों से आपको ही वोट देते आ रहे हैं, किन्तु विकास-कार्य आज तक एक भी नहीं हुआ है। न यहां स्कूल है न अस्पताल है, न सड़क है। और तो क्या, यहां का श्मशान घाट भी ठीक से नहीं बना है। नेताजी चेहरे को गम्भीर बनाते हुए बोले- भाइयों, इस बार आप मुझे और जिता दें, तो घर-घर में श्मशान-घाट खड़े कर दूंगा।

मैंने कहा- ऐसी स्तरहीन, सिद्धान्तहीन राजनीति के हाथों में धर्म ने अपना दामन पकड़ा दिया है, फिर कहां ठहर पाएगी मर्यादा, कहां टिक पाएगा अनुशासन? दुःख है पूरा देश सियासत की इस बीमारी से पीड़ित है-

आज पूरा देश-का-देश बीमार हो रहा है,
राजनीति के प्याले में अपना होश खो रहा है,
उठाकर अपने ही हाथों दरिया में तूफान को,
अपने ही हाथों वह अपनी किश्ती डुबो रहा है,

पूरे समाज को आह्वान करते हुए मैंने आगे कहा-

सोचें, आखिर यह नाटक् क़ब तक चलेगा,
इन भाषणों के पानी से चमन कैसे फलेगा,
बदलना होगा हमें इस सम्पूर्ण व्यवस्था को,
अगर धर्म अपने को भीतर से नही बदलेगा,

सभा में पूरी तरह सन्नाटा छा गया। मंच के चेहरे पर आने-जाने वाले भावों को भी अच्छी तरह पढ़ा जा सकता था। तभी संयोजक महोदय ने जोर से घण्टी बजाई। यह बैठ जाने का इशारा था। मुझे जो कहना था वह कह चुका था। इससे अधिक कहने का शायद लाभ भी नहीं था। दूसरे ही क्षण मैं अपने आसन की ओर बढ़ गया।

(8)

व्यवस्था जीवन का अनिवार्य अंग है। चाहे परिवार हो या समाज, एक नियम उसकी सुचारुता के लिए आवश्यक होता है। किंतु नियम ही सब कुछ नहीं होता। भावना नियम से भी ऊपर होती है। भावना के सामने सारे नियम बौने हो जाते हैं। वहां शबरी के जूठे बेर भी भगवान राम का मन जीत लेते हैं, विदुर-पत्नी के छिलके भी भगवान कृष्ण के लिए केले के फल से ज्यादा मधुर होते हैं, दासी चन्दनबाला के उड़द-बाकुले भी भगवान महावीर के लिए राजमहलों के राजभोग से अधिक स्वादिष्ट होते हैं, संतों की कुटिया भी प्रेम-दीवानी मीरा के लिए महलों को सुमन-शैय्या से ज्यादा सुखद होती है। इसी भाव-भूमिका पर एक मुक्तक मन में जन्मा-

यों तो जीवन के हर क्रम में नियम प्रमुख होता है,
किन्तु कभी ऐसा भी अवसर जब सम्मुख होता है,
प्रेम-पगी-पलकों में ज्वार भावना का उमड़ा हो,
उस पल नियम टूटने का भी अपना सुख होता है,

लेकिन नियमों में बंधकर ही सोचने वाले लकीर के फकीरों के लिए नियमों का ही महत्त्व होता है, भावना का नहीं। उनके भीतर एक चट्टानी जड़ता उग आती है, जिस पर भावना-वर्षा की बूंदों का कोई असर नहीं होता। सम्प्रदायपरक चिन्तन की लगभग यही स्थिति होती है। परिणामतः भावना-प्रधान साधना को जड़ता-प्रधान मजहब से बराबर जूझता पड़ता है।

यही मेरे साथ हुआ। धर्म-संघ का सिंहासन हिल उठा। दरबार में हाजिर होने का आदेश मिला। जबर्दस्त जबाव-तलबी हुई। और वे शब्द तो आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं... नियम टूटने का सुख... मुनि होकर ऐसी कविताएं लिखते हो?

प्रेम-पगी-पलकों में ज्वार भावना का उमड़ा हो,
उस पल नियम टूटने का भी अपना सुख होता है

तिरस्कारपूर्ण ढंग से इन पंक्तियों को दुहराते हुए कहा गया- या तो इन पंक्तियों को बदल दो या फिर यह मुक्तक न कहीं छप सकेगा, न कहीं पढ़ा जा सकेगा।

दूसरे विकल्प को स्वीकार करते हुए मैं उठकर चला आया।

(9)

एक सम्प्रदाय-विशेष के आचार्य को ऐसा लग रहा था कि दूसरे सम्प्रदाय का आचार्य मेरे भक्तों को तोड़ने में लगा है। कुछ स्थानों पर ऐसा हुआ भी था। इससे प्रथम आचार्य के मन में दूसरे आचार्य के प्रति प्रतिशोध की आग भड़कने लगी। वे बराबर इस ताक में थे कि कोई साम्प्रदायिक मुद्दा उछालकर भक्तों को वापस मोड़ा जाए, दूसरे आचार्य भी भिड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार थे। दोनों आचार्यों के बीच जमकर शीत-युद्ध शुरू हो गया। दोनों आचार्यों के भाषणों में खुलकर एक-दूसरे के विरुद्ध भड़काने वाली बयान-बाजी होती। पिछली आलोचना, भद्दे आक्षेप-आरोप, गन्दी इश्तिहार बाजी के साथ-साथ भक्त-समुदाय में कई बार सीधी मुठभेड़ होते-होते भी बची। तरह-तरह की अफवाहों से समाज के मानस में घृणा के बिष-वृक्ष तेजी से फलने-फूलने लगे।

इन सारी घटनाओं से मेरा मन अत्यन्त खेद-खिन्न हो उठा। इसी सन्दर्भ में धर्माचार्यों को सम्बोधित करते हुए मैंने कुछ मुक्तक लिखे। वे ये हैं-

मैं नहीं कहता, अपनी परंपराएं छोड़ दीजिए
अपना संबन्ध दूसरे संप्रदाय से जोड़ लीजिए
एकता यदि संभव नहीं है मेरे धर्माचार्यों।
तो हमारे में फूट डालना तो छोड़ दीजिए, (1)

आज हमारे फटे दिलों को सीने वाला चाहिए
आग लगाने वाला नहीं, आग पीने वाला चाहिए
अहिंसा प्रेम के उपदेश सुनते, ऊब चुके हैं हम
अब उपदेश देने वाला नहीं, उसे जीने वाला चाहिए (2)

बहुत बार लगता है, धर्म एक आफत है, बला है
भोले-भाले लोगों को ठगने की सीधी-सी कला है
प्रेम का प्रकाश आने दें इस मशाल से, धर्माचार्यों!
इसमें आपका भी भला है, हमारा भी भला है (3)

पानी के बदले आग बरसाने वाला अम्बर नहीं चाहिए
हंसते चमन को दलदल बनाने वाला समन्दर नहीं चाहिए
चैन से जीने न देकर जो फूट डालते हैं हमारे में
वैसे धर्माचार्य तो क्या, हमें तीर्थंकर भी नहीं चाहिए, (4)

... ...

भगवान महावीर के पच्चीसवें निर्वाण शताब्दी महोत्सव की तैयारियां राष्ट्रीय स्तर पर बड़े जोर-शोर से चल रही थी। उसी संदर्भ में बम्बई महानगर में एक विशाल जन-सभा का आयोजन जैन समाज की ओर से लिया गया था। विषय था जैन-एकता। सभी जैन संप्रदायों के प्रतिनिधि आचार्य तथा मुनि-गण उसमें आमन्त्रित थे। अपने प्रवचन-प्रसंग में मैंने कहा- यदि सभी संप्रदायों के आचार्य तथा मुनियों में एकता स्थापित हो जाए तो समाज में एकता आने में कोई देर ही न लगे। समाज में जो बिखराव है उसके लिए आचार्य तथा मुनि-जन ही जिम्मेवार हैं। प्रसंग-वश मैंने ये मुक्तक भी सभा में पढ़े।

उपस्थित जन-समुदाय ने मुक्तकों को खूब सराहा। बार-बार तालियां बजाकर लोगों ने अपनी हर्ष-सहमति प्रकट की। किन्तु आचार्य महाराज भयंकर रूप से कुपित हो उठे। उन्होंने अपने पूरे प्रवचन में मुझे ही आड़े हाथों लिया। अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं की सर्वोच्च स्थापना करते हुए वे मेरे पर तीखे व्यंग्यों की वाण-वर्षा करते रहे। उनकी दुर्वासा-मुद्रा देखकर बीच-बीच में मुस्करा देता। मेरी हर मुस्कान के साथ वाण-वर्षा की बौछार और तेज हो जाती।

लगभग 45 मिनट तक वह वाण-वर्षा चली। आचार्य के उदग्र क्रोध के सामने सारा जन-समुदाय तनावपूर्ण सन्नाटे में आ गया था। उनका प्रवचन पूरा होने पर लोगों ने चैन की सांस ली। तभी मैंने हंसते हुए कहा- यह प्रसन्नता का विषय है, मुक्तकों के माध्यम से जो बातें मैंने आपके समक्ष कही थी, आचार्य महाराज ने उनको सही साबित करने वाली एक जीती-जागती मिसाल हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दी है। मैं सोचता हूं अब मेरी बातों में आपको कोई संदेह नहीं रह जायेगा।

यह सुनते ही उपस्थित जन-समुदाय के चेहरे पर एक हंसी छलक आई। अब पूरा वातावरण तनाव-मुक्त था।

जैन धर्म में नारी का अवदान

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

जैन धर्म के चौवीस तीर्थंकरों में तेईस राजकुमार और एक राज कुमारी थी। तीर्थंकर जैसे सर्वोच्च पद को अलंकृत करने का गौरव जिस राजकुमारी को प्राप्त हुआ, उसका नाम था मल्लिकुमारी।

मल्लिकुमारी तीर्थंकरों की श्रृंखला में उन्नीसवें स्थान पर आती हैं भगवान मल्लिनाथ के रूप में प्रसिद्ध हैं।

मल्लिनाथ ने तीर्थंकर के रूप में जो अवदान समाज को दिया उसके लिए तो समाज उनका ऋणी है ही लेकिन तीर्थकरत्व से पूर्व राजकुमारी मल्लि ने अपनी सूझबूझ से छह राजाओं को प्रति-बोध दिया था, वह नारी जातिदत्त अवदानों में इतिहास के पृष्ठों पर अमिट रहेगा।

मल्लिकुमारी मिथिला नरेश कुंभ और महारानी प्रभावती की वह अनुपम कन्या थी जिसका नामकरण माता के दोहद के आधार पर किया गया। जब मल्लिकुमारी मां के गर्भ में थी तब मां की मनोभावना मल्लिका के फूलों की शैय्या पर सोने की हुई, इसी आधार पर उसका नाम मल्लिकुमारी रखा गया।

मल्लिकुमारी के अप्रतिम सौन्दर्य की चर्चा दूर-दूर तक फैल चुकी थी। विभिन्न देशों के अनेकों राजा, राजकुमार मल्लिकुमारी के रूप लावण्य पर मुग्ध थे।

राजा कुंभ के पास मल्लिकुमारी के विवाह सम्बन्ध के लिए स्थान-स्थान से आवेदन आने शुरू हुए। उधर राजकुमारी प्रारंभ से ही भौतिक सुखों से विरक्त होकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर चुकी थी।

महाराज कुंभ के पास आवेदन वापस लौटाने के सिवाय और कोई मार्ग नहीं था। अंग, बंग, काशी, कुरू और पांचाल इन छह देशों के राजाओं ने अपने आवेदनों की वापसी को अपना अपमान समझा और उसका बदला लेने के लिए गलत निर्णय लिया।

छहों राजाओं ने परस्पर संधि करके अचानक राजा कुंभ पर आक्रमण कर दिया। मिथिला नगरी के परिसर में पहुंच कर अपने दूतों के साथ छहों राजाओं ने मिथिला नरेश के पास संदेश भिजवाया कि हमको मल्लिकुमारी प्रदान करो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।

महाराज कुंभ कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि इन राजाओं को क्या जवाब दिया जाए। तभी मल्लिकुमारी ने अपने पूज्य पिता के सिर पर आए संकट का समाधान करते हुए कहा- पिताजी? आप दूतों से बोल दिजिए कि मल्लिकुमारी आप लोगों से मिलने के लिए तैयार है और शादी के बारे में वह खुद ही निर्णय करेगी लेकिन इस मिलन के लिए छह महीनों तक आपको प्रतिक्षा करनी पड़ेगी।

मिथिला नरेश ने अपनी पुत्री का संदेश छह दूतों के द्वारा छहों राजाओं तक पहुंचा दिया। मल्लिकुमारी से मिलन की बात सुनकर छहों राजा खुशी से झूम उठे। और वे छह महीनों का समय पूरा करने हेतु अपनी-अपनी राजधानी लौट आए।

इधर मल्लिकुमारी ने छहों राजाओं को प्रतिबोध देने हेतु एक युक्ति सोची। ठीक अपने ही रूप, रंग, आकार जैसी एक धातु की प्रतिमा का निर्माण करवाया। जो भीतर से पोली थी। उस प्रतिमा को एक विशिष्ट कक्ष में रखवाया। छह महीने तक मल्लिकुमारी जो भोजन स्वयं करती थी, उसी का आधा हिस्सा उस प्रतिमा में डाल देती और ढक्कन से बंद कर देती। छह महीने की अवधि पूर्ण होते ही छहों राजाओं को सादर निमन्त्रित किया गया। छहों राजाओं ने यथा निदिर्दष्ट भिन्न-भिन्न मार्गों से उस कक्ष में प्रवेश किया जिसके मध्य भाग में स्थित मल्लिकुमारी की प्रतिमा मल्लिकुमारी का भ्रम पैदा कर रही थी।

छहों राजा मल्लि की प्रतिमा में मल्लि का अद्‌भुत सौन्दर्य देखकर ठगे से रह गए। वे सोच भी नहीं पाए कि यह राजकुमारी का भ्रम पैदा करने वाली राजकुमारी मल्लि की प्रतिमा है। तभी पीछे के मार्ग से मल्लिकुमारी ने प्रवेश किया। मल्लि के देव दुर्लभ सौन्दर्य पर न्यौछावर वे छहों नरेश निर्णय नहीं कर पा रहे थे असली मल्लिकुमारी कौन सी है। वे एक टक मल्लि को निहार रहे थे कि मल्लि ने प्रतिमा के मस्तक पीछे लगा ढक्कन हटा दिया। ढक्कन हटाते ही सारा कक्ष असहाय दुर्गाध से भर गया। उस भयंकर बदबू ने असीम आनन्द को घृणा में बदल दिया। छहों नरेशों की मुखाकृतियां बदल गई। उन्होंने रुमालों से अपने-अपने नाक ढक लिए।

मल्लिकुमारी ने समुचित अवसर देखकर छहों राजाओं को सम्बोधित करते हुए कहा- महानुभाओ? जिस सौन्दर्य का आप पान करना चाहते हैं उसके परिणाम को देखकर घबरा क्यों गए। जिस मल्लि के शरीर पर आप मुग्ध हैं उस मल्लि के शरीर में भी यही दुर्गनध है। जो खाद्य सामग्री छह महीने तक इस मल्लि के शरीर में डाली गई, वही इस प्रतिमा के अंदर डाली गई थी। जो बदबू इस प्रतिमा से फूट रही है वह इस मल्लि के शरीर

में भी विद्यमान हैं। फर्क इतना ही है कि प्रतिमा का ढक्कन खुला है। मेरे शरीर का ढक्कन बंद है। यह शरीर अशुचि, अपवित्रता का भंडार है। नश्वर है, जीर्ण-शीर्ण होने वाला है। काम भोग भी नश्वर, क्षण भंगुर और किंपाक फल की भांति कटु परिणाम वाले हैं। आप किस पर मोहित हुए हैं। आत्मा के अनन्त सौन्दर्य और शाश्वत आनन्द को छोड़कर इस दिनश्वर देह के क्षणिक और घृणित सौन्दर्य के वशीभूत होकर इस पर नजर टिकाई है।

नरपुंगवो? एक नजर पिछले जन्म पर भी डालें। आपको याद होगा पिछले जन्म में हम सातों मित्र थे। एक साथ साधना का मार्ग स्वीकार किया था। एक समान तपस्या की थी। मैंने तपस्या में छल कपट का रास्ता अपनाया जिसका परिणाम है- स्त्री योनि की प्राप्ति। आप लोगों ने निश्चल भाव से तपस्या की जिससे पुरूषत्व कायम रहा। हमें पिछले जन्म की मित्रता को स्थाई बनाना है। आपका मेरे प्रति जरा भी अनुराग है तो मेरे त्याग मार्ग का अनुसरण करके सच्ची प्रीति का परिचय दें।

मल्लिकुमारी के मार्मिक उद्‌बोधन ने छहों नरेशों को झकझोर दिया। उन्हें सिर्फ पिछले जन्म की स्मृति ही नहीं हुई। उनके जीवन में एक अद्‌भुत क्रांति घटित हो गई। राग-विराग में बदल गया। वासना अध्यात्म में रूपान्तरित हो गई। मल्लिकुमारी के साथ ही छहों नरेशों ने आत्म कल्याण का दुर्गम पथ स्वीकार कर लिया।

छह गर्वोन्नत नरेशों पर एक सुकोमल राजकुमारी की अद्‌भुत विजय की यह अमर गाथा इतिहास की विरल घटनाओं में अंकित रहेगी।

गजल

इस तरह रात-दिन गुजरते हैं
टीस दिल में हैं, होंठ हंसते हैं

तोड़कर ख्वाब के सभी शीशे
वो हकीकत का रक्स[1] करते हैं

किसलिए बोलिए बदन उनके
बर्फ की वादियों में जलते हैं

हम सिमटने की चाह में अक्सर
हर गली, मोड़ पर बिखरते हैं

कोई पूछे 'विनीत' ख्वाबों से
मेरी आंखों में क्यों मचलते हैं

-डॉ. विनीता गुप्ता

कविता

युगपुरुष आचार्यश्री रूपचन्द्रजी
के जन्मदिवस पर विशेष

भारत की पावन धरती पर।
युग पुरुष तुम्हारा अभिनन्दन।।
इस मातृ-भूमि की माटी से।
कर तिलक बधाएं जन नन्दन।।

1. हे शांतिदूत! ले विश्व शांति।
सन्देश धरा पर घूम रहे।।
हे धर्म दूत! तुम धर्म ध्वज।
फहराने नभ को चूम रहे।।
हे भारत माता के सपूत।
भारत की पानव संस्कृति का।।
देकर प्रबोध इस दुनियां को।
अपनी मस्ती में झूम रहे।।
तेरे अमोल अवदानों पर।
न्यौछावर प्रकृति का कण-2।।

2. जा देश-विदेशों में तुमने।
मूर्छित मानव को झकझोरा।।
मंदिर मस्जिद गिरजे में बंद।
धर्म को जीवन से जोड़ा।।
दिखलाओं राह उन्हें अब जो।
गुमराह हुए सब कुछ तोड़ा।।
हिंसा की लपटों में झुलसे।
मानव को चैन मिले थोड़ा।।
महावीर बुद्ध के हे वंशज।
नत मस्तक सब करते वन्दन।।

जिन्दगी : नदी-नाव

यह जिन्दगी महज नदी-नाव है... हर संयोग के साथ प्रयोग...सहयोग... वियोग का क्रम जुड़ा हुआ है।

एक व्यक्ति जब समुद्र पार करने के लिए नाव पर सवार होता है तो इधर-उधर किनारे पर खड़े कुछ लोग भी उसके साथ नाव में बैठ जाते हैं...। उस नौका-विहार में वह व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से चर्चा-वार्ता करता है... हँसी-मजाक करता है... अमोद-प्रमोद के क्षणों में सहयोग की लेन-देन खूब बढ़ा लेता है।

इस तरह जान-पहचान बढ़ती है और एक-दूसरे का पता-ठिकाना पूछकर सम्बन्ध घनिष्ठ हो जाते हैं। इस यात्रा के दौरान कुछ लोगों से दोस्ती हो जाती है तो कुछ लोगों से शत्रुता... देखते ही देखते नौका दूसरे किनारे लग जाती है... सभी यात्री अपनी-अपनी राह चल पड़ते हैं। बस, यही तो मनुष्य की जिन्दगी है... नाव में बैठना जन्म है और नाव से उतरना मृत्यु है।

मृत्यु कब, कहां और कैसे होगी यह कोई नहीं जानता। कोई बीमारी से भी मर सकता है तो कोई आग में कूदकर या जहर खाकर भी मर सकता है। कभी-कभी प्राकृतिक आपदाओं से या एक्सीडेन्ट से भी लोगों की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है।

इस दुनिया में ऐसा कोई वकील नहीं जो सुप्रीम कोर्ट से मौत के समक्ष स्टे आर्डर ला सके...

ऐसा कोई फैमेली डॉक्टर नहीं जो मौत के पंजे से किसी को मुक्त कर सके...

पैसा, प्रतिष्ठा एवं परिवार की मजबूत दीवारें भी मौत को नहीं रोक सकती। अतः दम निकलने से पहले अपने को सुधारने में जीवन का दम लगा लेना... चिता जलने से पहले अपना अनमोल चिन्तन जगा लेना।

-मृत्यु पाथेय

अन्तर्दृष्टि

जो अपनी ही आत्मा द्वारा अपनी आत्मा को जानकर राग और द्वेष में समभाव रखता है, वही पूज्य है।

-भगवान महावीर

ब्रह्म-ज्ञान मूक ज्ञान है, स्वयं प्रकाश है। सूर्य को अपना प्रकाश मुंह से नहीं बताना पड़ता। वह है, यह हमें दिखाई देता है। यही बात ब्रह्म-ज्ञान के बारे में भी है।

-महात्मा गांधी

○ साध्वी मंजुश्री

बुरा नहीं करना रे, किसी का जहान में,
करना सो भरना वैसा लिखा है विधान में।

किसके लिये भी कोई, खड्डा बनाता,
उसके लिए वही तो, कूप बन जाता,
पुरोहित ने नाक कटाया, लो वृत्त ध्यान में।

जीवन भर दुर्योधन ने, की थी बुराई,
भीम गदा से उसने, अकाल मृत्यु पाई,
रावण ने खोया जीवन, रण के मैदान में।

जयचन्द ने खेल खेला, पृथ्वीराज साथ में,
वह भी मरा है मुहम्मद, गौरी के हाथ में,
कटु फल छुपा है, देखो बुराई की म्यान में।

फूलों की नव आशा में, शूले बिछाता,
जहर का बीज बोकर, सुधा नहीं पाता,
करना भलाई पल-पल मंजू के गान में।

तर्ज- छुप गया कोई रे

कहानी

महान काम

एक था उंगन्योम। 20 वर्ष का सुंदर और समझदार युवक। एक दिन राजा हॉनान ने उसे अपने महल में बुलाया और पूछा- ''लड़के, मैंने सुना है कि तुम्हें घूमने-फिरने का बहुत शौक है। तुमने दुनिया देखी है। अगर तुम्हें किसी अद्‌भुत घटना का अनुभव हो, तो हमें बताओ।''

उंगन्योम ने उत्तर दिया- ''क्षमा करें महाराज! अपनी यात्राओं में मेरी रुचि दर्शनीय स्थानों के सैर-सपाटे में नहीं रही। मैं तो लोगों से मिलने और पहचानने को उत्सुक था। तभी तो मुझे आज तक उन तीनों की याद है, जिनके काम महान थे।''

''महान काम!'' राजा ने अचंभे से कहा- ''आखिर महान काम कहते किसे हैं?''

उंगन्योम से उत्साह से बताया- ''क्या खूब था पहला आदमी! बहुत ही योग्य था। उच्चतम पदवी के योग्य! लेकिन मर्यादावश उसने अपना स्थान स्वयं ग्रहण नहीं किया। अपने स्थान पर किसी अन्य को बैठा दिया। कहां मिलते हैं ऐसे लोग?''

''वाह-वाह!'' राजा के मुंह से निकला- ''बहुत महान होते हैं ऐसे लोग! अब जरा दूसरे महान के बारे में भी बताओ।''

''महाराज, दूसरा आदमी भी कमाल का था। खूब धनी था, तब भी फिजूलखर्ची नहीं करता था। सूती कपड़े ही पहनता था।''- कहते हुए उसने देखा, राजा जैसे मंत्रमुग्ध था। राजा चकित था कि कैसे अमीर होते हुए भी वह आदमी साधारण सूती कपड़े पहनता था। फिर राजा बोला- ''अब तीसरे महान आदमी की कथा सुना दो।''

-''महाराज, तीसरा आदमी बहुत ही प्रतिष्ठित था। वह जन्म से ही महान था। लेकिन दिखावा उसे छू तक तक नहीं सका था। वह अपनी महानता को नहीं बधारता था। सीधा-सादा लगता था। जरा भी घमंड नहीं था उसे।''

''वाह-वाह! ऐसे महान लोगों की कथा सुनाकर, तुमने मेरा मन मोह लिया है। ऐसे महान लोगों से ही हमें प्रेरणा मिलती है। लेकिन महान लोगों की पहचान करना भी महानता होती है। यह गुण तुममें भी है। तुम सच में भले आदमी हो।'' कहते-कहते राजा की आंखें भीग गई।

उंगन्योम बहुत खुश था। राजा ने कहा- ''मैं तुम्हारा सम्मान करता हूं। मेरी दो बेटियां हैं। तुम जिससे चाहो, विवाह कर सकते हो।''

सुनकर उंगन्योम खुशी से चौंक गया। बोला- ''ओह राजा, आप महान हैं!'' यह कहकर उंगन्योम राजा को बहुत ही आदर देते हुए चला गया। घर पहुंचकर उसने सारा किस्सा माता-पिता को बताया।

माता-पिता ने सुना, तो भौचक्के रह गए। खुशी के मारे उनकी आंखें भर आईं। अपने बेटे पर उन्हें बहुत गर्व था। उन्होंने कहा- ''तुम बहुत भाग्यशाली हो बेटा। राजा की बड़ी बेटी बहुत सुंदर नहीं है। हां, छोटी बेटी की सुंदरता तो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। तुम्हें छोटी बेटी ही चुननी चाहिए।''

उसी समय मंदिर के पुजारी ने भी राजा के इस सम्मान के बारे में सुना। वह दौड़ता हुआ उंगन्योम के पास आया। पूछा- ''क्या यह सच है कि राजा ने तुम्हें अपनी बेटियों में से किसी के भी साथ विवाह करने का न्योता दिया है?''

''हां!''- उंगन्योम ने कहा।

''तो तुम किसे चुनोगे?''-पुजारी ने पूछा।

-''मेरे माता-पिता ने तो छोटी राजकुमारी को चुनने के लिए कहा है।''

''अगर तुम छोटी राजकुमारी से विवाह करोगे, तो मैं मर जाऊंगा। हां, यदि तुम बड़ी से विवाह करोगे, तो तुम्हारे साथ जरूर दो अच्छी बातें होंगी। सुंदरता ही सब कुछ नहीं है। चलता हूं। अपना ध्यान रखना।'' कहकर पुजारी चला गया।

उंगन्योम ने खूब सोचा। आखिर उसे पुजारी की बात ठीक लगी। वह नहीं चाहता था कि उसकी किसी बात से पुजारी की मौत हो जाए। उसने निश्चय किया कि विवाह के लिए वह बड़ी राजकुमारी को ही चुनेगा।

थोड़े दिनों बाद राजा का संदेश आया। राजा ने पूछा था कि उंगन्योम ने उसकी कौन-सी बेटी को विवाह के लिए चुना? उंगन्योम ने पुजारी की सलाह मानते हुए बड़ी राजकुमारी को चुना। फिर क्या था! विवाह का दिन निश्चित किया गया। और बड़ी धूम-धाम से विवाह कर दिया गया।

तीन ही महीने बीते थे। राजा बहुत बीमार पड़ गया। यह जानकर कि उसकी मौत निकट है, उसने दरबारियों को अपने पास बुलाया। फिर साफ-साफ कहा- ''मेरी बात ध्यान से सुनो! मेरा कोई बेटा नहीं है। बस, बेटियां हैं। एक दामाद है। मेरी मौत के बाद मेरे दामाद को राजगद्‌दी मिलनी चाहिए। वह मेरी बड़ी बेटी का पति है और योग्य भी है।''

यह कहकर राजा चुप हो गया। अगले ही दिन उसकी मौत हो गई। उंगन्योम को राजगद्‌गी पर बैठा दिया गया। वह राजा बन गया। राजतिलक के बाद एक दिन दरबार में आने वालों में एक पुजारी भी आया। उसने आते ही राजा को दस हजार बर्षों तक राज करने का आशीर्वाद दिया।

राजा उंगन्योम ने पुजारी को पहचान लिया था। वह वही पुजारी था, जिसने उसे राजा की बड़ी लड़की से विवाह करने की सलाह दी थी। उंगन्योम पुजारी से मिलकर बहुत खुश था। तब पुजारी ने कहा- "बधाई हो राजा! देखा तुमने, दो अच्छी बातें तुम्हारे जीवन में घट गई हैं। एक तो बड़ी लड़की से विवाह करके तुमने राजा और रानी को सुख पहुंचाया। दूसरों को सुख पहुंचाने से खुद को कितना सुख मिलता है, इसका अनुभव हुआ न! दूसरे, तुम्हें राजगद्दी मिल गई और तुम राजा बन गए।"

उंगन्योम बेहद खुश था। उसने पुजारी को बहुत धन्यवाद दिया। यही नहीं, उसने पुजारी को अपने राज्य का मुख्य पुजारी भी बना दिया। साथ ही उपहार में सोने की मुहरें भी दीं।

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

चुटकुले

1. रेखा बबली से- तुम अपना जूता गलत पैर में पहन रही हो।
बबली मम्मी जूता तो ठीक है, लगता है कि मेरे पैर ही उल्टे लगा दिये हैं।

2. एक औरत बच्चों के झगड़ने पर अपनी पड़ोसन को शिकायत करते हुए, तुम्हारे बच्चों ने मेरे बेटे को गालियां दी हैं।
पड़ोसन- क्या गन्दी-गन्दी गालियां दी थी।
पहली औरत- गालियां गन्दी ही होती है, नहीं तो में शिकायत करने नहीं आती।

3. एक बार चमकू लाल नहाने के लिए नदी में जाने लगा तो उसने पास खड़े बच्चे से कहा मेरे कपड़ों का ध्यान रखना, मैं नदी में नहाने के बाद तुम्हें 10 रुपये दुंगा।
बच्चा- अंकल मैं यह नहीं कर सकता।
चमकू- क्यों क्या हुआ, थोड़ी देर की तो बात है।
बच्चा- कल भी एक अंकल ऐसा ही बोल कर नदी में नहाने के लिए गये थे अभी तक तो वह बाहर ही नहीं निकले। आखिर मैं कब तक यहां खड़ा रहूं।

4. चन्दन- अरे भाई लोग ऐसा क्यों बोलते हैं कि क्राइम सीन में पुलिस टाइम पर नहीं पहुंचती!
प्रवीण- अरे तुझे इतना भी नहीं पता, कानून के हाथ लंबे होते हैं, पैर नहीं।

जल्द दूर होगा माइग्रेन

माइग्रेन सिर में उठने वाला तीव्र दर्द है जिससे आंखों के आगे अंधेरा छा जाने जैसी समस्या का सामना भी करना पड़ता है। माइग्रेन के उपचार के लिए आने वाली ड्रग्स सभी के लिए उपयुक्त नहीं होती।

1. सिर के पिछले हिस्से में ट्रांसकेनियल मैग्नेटिक स्टिम्यूलेशन डिवाइस से बिजली की दो तरंगे मस्तिष्क में प्रषित की जाती है। उपकरण के भीतर मौजूद कॉइल से शक्तिशाली करन्ट पैदा होता है जिससे सैकंड के छोटे से हिस्से के लिए तीव्र मैग्नेटिक क्षेत्र पैदा होता है।
2. मस्तिष्क में चल रहे इलैक्ट्रिकल स्टोर्म को यह बिजली की तरंगे शॉर्ट सर्किट कर देती है। जिसे माइग्रेन के दर्द से राहत मिलती है।

लोगों को जीवन भर दुखी करने वाले टॉप-20 रोगों में माइग्रेन भी शामिल है। एक अनुमान के अनुसार विश्व भर में आठ में से एक पुरुष या महिला को इस रोग ने अपनी चपेट में ले रखा है।

क्या है माइग्रेन?

माइग्रेन सिर में उठने वाला तीव्र दर्द है जिससे आंखों के आगे अंधेरा छा जाने जैसी समस्या का सामना भी करना पड़ता है। माइग्रेन के उपचार के लिए आने वाली ड्रग्स सभी के लिए उपयुक्त नहीं होतीं।

अच्छी खबर

अब माइग्रेन से ग्रस्त रोगियों के लिए एक अच्छी खबर है। विश्व भर के लाखों-करोड़ों माइग्रेन रोगियों का दर्द जल्द गायब हो जाऐगा। अमेरिका में 'सिंगल पल्स ट्रांसक्रेनियल मैग्नेटिक स्टिम्यूलेशन' नामक एक तकनीक पर हो रही शोध के सफल रहने पर माइग्रेन के दर्द से राहत पाना बहुत आसान हो सकता है। इस तकनीक में दर्द से राहत दिलाने के लिए मस्तिष्क कोशिकाओं में प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए शक्तिशाली चुम्बकों से पैदा की जाने वाली इलैक्ट्रिकल करंट्स का प्रयोग किया जाता है।

सकारात्मक परिणाम

माइग्रेन के कारण तीव्र सिर दर्द का सामना करने वाले 160 से अधिक रोगियों ने इस शोध में भाग लिया। इनमें से आधों को इस तकनीक संबंधी तैयार किया गया उपकरण

घर ले जाने दिया गया जबकि बाकी आधों को बिल्कुल एकसा ही लगने वाला एक कृत्रिम उपकरण दिया गया। उन्हें कहा गया कि वे कम से कम तीन बार माइग्रेन का दर्द उठते ही इस उपकरण का प्रयोग करें और इसके प्रभाव को रिकॉर्ड करें।

इस उपकरण को प्रयोग करने वाले करीब 40 प्रतिशत लोगों को दो घंटों के भीतर दर्द से आराम मिल गया जबकि कृत्रिम उपकरण का प्रयोग करने वालों में से केवल 22 प्रतिशत का दर्द ही 2 घंटे के भीतर दूर हो सका। इस उपकरण का प्रयोग करने वाले अन्य लोगों के 24 से 48 घंटे के भीतर ठीक होने की सम्भावना अधिक देखी गई।

कोशिकाओ पर प्रभाव

शोधकर्त्ताओं के अनुसार यह उपकरण सिर के भीतर बिजली की दो तीव्र धाराएं प्रेषित करता है जो सिर में दर्द पैदा करने वाले 'इलैक्ट्रिकल स्टोर्म' को शॉर्ट सर्किट कर देता है।

वैसे शोधकर्त्ताओं को इस बारे में ठीक-ठीक पता नहीं है कि यह उपकरण वास्तव में किस प्रकार कार्य करता है परन्तु उनका मानना है कि इस उपकरण से पैदा होने वाली इलैक्ट्रिकल तरंगें माइग्रेन के लिए जिम्मेदार आवश्यकता से अधिक उत्सुक मस्तिष्क कोशिकाओं को शांत कर देती है।

जर्मनी के एक विशेषज्ञ का कहना है कि इस उपकरण को उपयुक्त ढंग से प्रयोग करने के लिए अभी इस पर और शोध करने की जरूरत है क्योंकि कुछ मामलों में यह नुकसान भी पहुंचा सकता है। वैसे उसका भी मानना है कि माइग्रेन के उपचार की दिशा यह अहम कदम है।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

कब क्या खाएँ

चैते नीम बेल बैसाख, साढ़े अदरक जेठे दाख।
सावन हर्रे भादों चित्त, क्वॉर मास गुड़ खावे नित्त।
कार्तिक मूली अगहन तेल, पूषे करो दूध से मेल।
माघे घी खिचड़ी सों खाए, फाल्गुन अमलक हरा चबाए।
राखे जो इनका उपयोग, वो सौ साल जिये बिन रोग।

मासिक राशि भविष्यफल-सितम्बर 2011

○ डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में अलालाभ तथा उत्तरार्ध में अच्छा फल देने वाला है। किसी नई योजना की शुरूआत हो सकती है। नौकरी जातकों का भी पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध श्रेष्ठ रहेगा। हर कार्य में सतर्कता को प्राथमिकता दें। संतान से सम्भावित विवाद को टालें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रमसाध्य लाभ देने वाला है। अधिक परिश्रम करने के पश्चात् फल मिलेगा। शत्रु सिर उठायेंगे पर उन्हें अपने मनसूबे पूरे करने में सफलता नहीं मिलेगी। परिवार में तनाव के अवसर आएंगे पर बुजुर्गों के हस्तक्षेप से मसले सुलझ जाएंगे। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य फल दायक है। किसी नई योजना पर कार्य किया जा सकता है, निर्णय लेने का अच्छा अवसर है। कोई पुराने लेन देन का मामला भी सुलझ सकता है। संतान की ओर से चली आ रही चिन्ता मिटेगी। छोटी बड़ी यात्रायें होंगी जिनमें सावधान रहना आवश्यक हैं।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक रहेगा। अच्छी आय होने के आसार हैं। परिवार में थोडी नोंक झोक के पश्चात सामन्जस्य बना रहेगा। किसी लटके हुए कोर्ट कचहरी के कार्य में न्याय पूर्ण फैसला संभावित है। मन में प्रसन्नता बनी रहेगी। यात्राओं के योग बनेगें। जिनमें सावधानी अपेक्षित है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में यश मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह बहुत प्रयत्न करने पर अल्प लाभ कराने वाला है। व्यय भी विशेष होगा। पत्नी तथा बच्चों की सेहत के प्रति लापरवाही न बरतें। मानसिक उद्विग्नता रहेगी। किसी भी कार्य को करने से पहले अच्छी प्रकार सोचे। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी। जिनमें सावधानी अपेक्षित है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ देने वाला है। कोई नई योजना भी बन सकती है। सरकारी नौकरी करने वालों के लिए भी समय अच्छा है। कोई पदोन्नति आदि भी हो सकती है। अन्य जातकों के मन में भी सोचे हुए कार्यों के बन जाने से प्रसन्नता बनी रहेगी। कुछ जातकों का सम्पर्क नए लोगों से हो सकता है जो उनके कार्यों में सहायक होंगे। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखना होगा।

तुला–तुला राशि के लिए जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सीमित अर्थ लाभ देने वाला है। परिश्रम अधिक करना पडेगा। विरोधी हावी रहने की कोशिश करेंगे। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखने के लिए भी परिश्रम करना पड़ेगा। वाद-विवाद से बचते हुए अपने बुजुर्गों की राय लें। सयंम से काम लें। स्वास्थ्य की ओर से सचेत रहें। समाज में मान सम्मान समान रूप से बना रहेगा।

वृश्चिक–वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध में अपेक्षा क्रत अच्छा फल देने वाला है। किसी पुराने लम्बित काल कार्य के पूर्ण होने की संभावना है। ऐसे कार्य किसी हितेषी के हस्तक्षेप से सिद्ध होंगे। उत्तरार्ध में पारिवारिक असमान्जस्यता के कारण मन अशांत रहेगा।

धनु–धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभा लाभ की स्थिति लिये हुए होगा। कार्य एक एक कर बनेंगे। परिवार जनों में क्लेश की स्थिति बनेगी, एक दूसरे पर छींटाकाशी होगी। ऐसी स्थिति से अपने आपको बडी होशियारी से बचाकर रखना होगा। स्त्री व संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे। यात्रा मे सावधानी बरतें।

मकर–मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य फल दायक है। फिर भी व्यय अधिक रहने का योग है। कुल मिलाकर इस माह का अंतिम सप्ताह की शुभफलदायक कहा जाएगा। अन्यथा मानसिक चिंता बनी रहेगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य की ओर से ध्यान दें। विरोधियों से सावधान रहें। समाज में मान सम्मान समान रूप से बना रहेगा। छोटी बड़ी यात्रायें होंगी जिनमें सावधान रहना आवश्यक हैं।

कुंभ–कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभप्रद कहा जाएगा। नई योजना बनाने के लिए भी अच्छा अवसर है। अपने तथा अपने भाइयों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। किसी धार्मिक यात्रा का योग अपने बुजुर्गों के साथ बन सकता है। यात्रा में सावधानी बरतें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाएं रखें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

मीन–मीन राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अल्प लाभ कराने वाला है। तथा खर्चा विशेष कराएगा। कोर्ट कचहरी के कार्यों में किंचित सफलता मिल सकती है। सरकारी कर्मचारियों के लिए भी कोई अच्छा समय नहीं है। उनका स्थानान्तरण भी संभव है। अन्य कारोबारी भी सोच समझ कर अपना धन कारोबार मे लगाएं कोई अप्रिय सूचना भी मिल सकती है।

-इति शुभम्

समाचार दर्शन

महासती संघप्रवतीनी साध्वी मंजुलाश्री के मार्गदर्शन में मानव मंदिर मिशन की गतिविधियां सुचार रूप से चल रही हैं। मानव मंदिर मिशन हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। साध्वी मंजुश्री जी महाराज भी अपनी सहयोगी साध्वीयों के साथ मानव मंदिर दिल्ली में विराजमान हैं।

पुज्य गुरूदेव सात समुद्रपार :

स्वीडन, 20 जुलाई परम पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज और भारतीय राजदूत श्री अशोक साजनहार के साथ उनके आवास पर धर्म-चर्चा रही। जिसमें आज के इस विज्ञान-युग में धर्म की महता पर विशेष संवाद रहा। पूज्य गुरूदेव के दर्शनों से राजदूत अशोक साजनहार जी बहुत ही प्रसन्न व प्रभावित हुए। धर्म चर्चाओं व गुरूदेव की रचित मुक्तकों व गजलों से उन्हें अपनी जिज्ञासाओं का सामाधान मिला। इस मधुर मिलन की भूमिका में श्री नवल सिंह/सीमा सिंह का अहम सहयोग रहा।

स्वीडन के इसी प्रवास में 24 जुलाई रविवार को प्रातः स्टॉक के हिन्दू मंदिर में पूज्य गुरूदेव के प्रवचन का आयोजन किया गया। अप्रवासिय भारतीयों ने इस प्रवचन का लाभ लिया। मंदिर समिति की अध्यक्ष एवं मंदिर के महिला कीर्तन मंडली ने पूज्यवर का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए गुरूवर के चरणों में सामुहिक वंदना गीत प्रस्तुत किये। पूज्यश्री ने मंदिर में सम्मिलित भक्तों को आर्शीवाद देते हुए प्रेम का महत्त्व बताया। पूज्यवर ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता के दर्शन देते हुए मानव दर्शन धर्म को श्रेष्ठ बताया। पूज्य गुरूदेव के सानिध्य में भक्तों की गुजारिश पर सौरभ मुनि ने अंर्न्तमन के भावों को जागृति करने वाली तेरी मेहरवानी का... मधुरमय भजन का गायन किया।

आयोजन के समापन के पश्चात श्रद्धालुओं की भीड़ ने पूज्यवर के चरणों में भाव पूर्ण पुष्प समर्पित किये। इस आयोजन के सफल प्रयास में विशेष भूमिका प्रीती सिंह पोल व पृथ्वी सिंह पोल के परिवार की रही। यहां से पूज्यवर ने धर्म-जागृति, धर्म-प्रसार व भक्तों के कल्याण हेतु 1 अगस्त को अमेरिका यात्रा की ओर प्रस्थान किया। अब पुज्य गुरूदेव जी अध्यात्मिक जागृत कार्यक्रम में लोस-एनजलिस में हैं। इतना विशाल जन समुदाय कभी भी स्वीडन, स्टॉक के हिन्दू मंदिर में एकत्र नहीं हुआ। सभी भक्तजनों में गुरूदेव जी के प्रति अटूट श्रद्धा का भाव देखने को मिला।

रक्षा बंधन :

मानव मंदिर जैन आश्रम दिल्ली में रक्षा बंधन बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। भाई-बहन के इस पवित्र त्योहार को मानव मंदिर गुरुकुल में श्रीमती विनिता गुप्ता के आगमन के साथ

शुरूआत हुई। श्रीमती विनिता गुप्ता ने सभी बच्चों को राखियां बांधी। तत्पश्चात गुरुकुल की पूर्व छात्राओं के आने के बाद रक्षाबंधन बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस पर्व की हमारे गुरुकुल में बेसब्री से प्रतिक्षा रहती है।

स्वतंत्रता दिवस :

मानव मंदिर गुरूकुल में आजादी का दिन 15 अगस्त बड़ी गर्मजोशी से मनाया गया। सुबह-सुबह ही रिम-झिम बुंदों ने मौसम को और भी सुहाना बना दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ध्वजा रोहण के साथ हुआ। मानव मंदिर गुरुकुल के छात्रों ने देश-भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। सभी लोगों ने बच्चों के देश-भक्ति-भावना से गीतों की खूब प्रशंशा की। जनगण मन... राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। श्री सुभाष तिवारी, श्री अमित बाथला, श्री प्रदीप मल्होत्रा, श्री पी.सी./रीटा जैन, श्री अरुण तिवारी, आदि लोगों की उपस्थिति में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समताश्री जी ने किया।

-स्टॉकहोम, स्वीडन के हिन्दू मंदिर में प्रवचन से पूर्व मंत्रोच्चारण करते हुए ध्यानलीन पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज साथ में हैं सौरभ मुनि।

-हिन्दू मंदिर स्टॉकहोम, स्वीडन में पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों का आनंद लेते हुए भक्तजन।

-स्वीडन में भारतीय राजदूत श्री अशोक साजनहार पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज से आज के युग में धर्म-विज्ञान की महत्ता पर मार्ग दर्शन प्राप्त करते हुए साथ में है सौरभ मुनि जी।